सो ए ना जननेवाली कही, तलब बेटे की राखे सही।
बूढ़ा ईसा आवाज करे, आस्ती आवाज कोई ना दिल धरे।। ३ ।।

जिकरिया कहता है कि मेरी अब निन्यानवे वर्ष की उम्र हो गई है और बेटे की चाहना बाकी है। बूढ़ा ईसा (श्री देवचन्द्रजी) इतनी कमजोर आवाज से बोलते थे, जिसकी कोई परवाह नहीं करता था।

पांच जिल्दें इन मजलें पाई, तो लों बात करी छिपाई।
जेता कछू केहेता पुकार, सुनने वाला न कोई सिरदार।। ४ ।।

यहां रामनगर तक रास, प्रकास, खटरुती, कलस, सनंध मिल गई थीं। फिर भी अपने खुदाई दावे को छिपाकर रखा, क्योंकि श्री देवचन्द्रजी की धीमी आवाज को सुनने वाला कोई सिरदार नहीं था।

आवाज उनकी थी इन पर, चाहे आप कोई लेवे खबर।
ए सुनियो दूजी विख्यात, दूजे जामेंकी कहूं बात।। ५ ।।

जिकरिया (श्री देवचन्द्रजी) का इलम इस प्रकार था कि जिसे ज्ञान चाहिए, वह श्री देवचन्द्रजी के पास जाए। अब स्वामीजी कहते हैं कि अब दूसरे जामे अर्थात् मैं अपनी बात करता हूं।

कह्या सुनो मेरे परवरदिगार, धोए हाड़ बुढ़ापे नार।
खंभ में वजूद इन घर, बूढ़े हाड़ सुस्त इन पर।। ६ ।।

जिकरिया पैगम्बर ने (श्री देवचन्द्रजी ने) कहा है कि मेरे खुदा! मेरी बात सुनो। बुढ़ापे ने मुझे कमजोर कर दिया। केवल शरीर में हड्डियां बाकी हैं और इस तन में केवल रीढ़ की हड्डी पर ही यह तन खड़ा है जिससे सभी अंग सुस्त हो गए हैं।

कह्या होवे वजूद तमाम, इन सें भली भांत होवे काम।
जो सिर मेरा हुआ सुपेत, तरफ रोसनी नहीं अचेत।। ७ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे खुदा! यह शरीर भले बूढ़ा है, परन्तु इससे धर्म का काम अच्छी तरह से हो रहा है। मेरा सिर सफेद जरूर हो गया, परन्तु ज्ञान की रोशनी कम नहीं हुई है।

अंदर ज्वानी है रोसन, काह ज्यों पकड़े अगिन।
उसही झलकार थें मकबूल, बूढ़े रोसनी न गई भूल।। ८ ।।

शरीर के अन्दर ज्ञान की जवानी है। जैसे घास के ढेर को आग जला देती है उसी तरह से ज्ञान की शक्ति से इनकी अर्जी खुदा ने स्वीकार की। बूढ़े होने पर तारतम ज्ञान से कमजोरी नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ ४१९ ॥

ए जंजीर सिपारे सोलमें माहें, बरस सौ की मजल है जांहें।
याद किया माहें कुरान, किस्से इद्रीस की पेहेचान।। १ ।।

कुरान के सोलहवें सिपारे में सौ साल की मंजिल है और इद्रीस पैगम्बर का किस्सा लिखा है।

Nijanand App

बेटा नवासे साहेब का, बाप दादा नूह था।
अबनूस था उसका नाम, इद्रीस लकब कह्या इस ठाम।। २ ।।

अग्रसेन राजा की लड़की का लड़का (दोहता) श्री कृष्ण था। बाप का नाम वसुदेव था। उन श्री कृष्ण का नाम अबनूस लिखा है। रामनगर में आकर श्री प्राणनाथजी महाराज के तन से इद्रीस जैसा काम करने से इद्रीस का खिताब मिला।

ए लकब दिया है सांच कारन, मालूम हुआ वास्ते इन।
अव्वल खत यों लिख्या कलाम, नजूम दरजी पना किया इसलाम।। ३ ।।

इनको इद्रीस का खिताब सब धर्मग्रन्थों से सत्य के ज्ञान को छांटने के कारण मिला। कुरान में इद्रीस के लिए लिखा कि उन्होंने कपड़े के टुकड़े जोड़-जोड़कर चादर बनाई।

तीस वरक हुए नाजल, ऊपर जामें कहे असल।
बीच किताब ल्याए इद्रीस, पीछे आदमके सौ बरीस।। ४ ।।

श्री प्राणनाथजी को अब तक सनंध के तीस प्रकरण उतरे। रामनगर की मंजिल में सौ वर्ष सम्वत् १७३८ पूरे होने पर खुदाई दावा लेकर भिखारीदास और शेख खिदर को कुरान पुराण से अपनी पहचान विजियाभिनन्द बुध और इमाम मेंहेंदी होने की कराई, तो इद्रीस का खिताब मिला।

तेहेकीक वह था कहे खलक, एही सांच कहेगा हक।
पोहोंचाया चौथे आसमान, बीच मेयराज भिस्त पेहेचान।। ५ ।।

जब तक आखिरी इद्रीस श्री प्राणनाथजी जाहिर नहीं हुए, तब तक लोग कहते थे कि इद्रीस पैगम्बर खुदा का सच्चा पैगाम लाने वाला आएगा। अब श्री प्राणनाथजी इमाम मेंहेंदी जाहिर हो गए। उन्होंने मोमिनों को चौथे आसमान परमधाम का ज्ञान दिया, जहां मुहम्मद साहब दर्शन करने (मेयराज की रात में) पहुंचे थे।

पैगंमरकी दरगाह साबित, रसूल इद्रीस फुरमाए मिले इत।। ६ ।।

मुहम्मद साहब के परमधाम में जाकर खुदा से बात करने की बात सत्य हो गई। रसूल ने कहा था आखिर को इद्रीस पैगम्बर आएगा। वह रामनगर में जाहिर हो गए।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ४२५ ॥

कह्या आम सिपारे माहें, अग्यारै सदी लिखी है जांहें।
हुकम हादी के खोलों इसारत, पाइए कौल जाहेर कयामत।। १ ।।

आम सिपारे में लिखा है कि ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी। इस कयामत के वायदे को श्री राजजी महाराज के हुकम से मैं खोल देती हूं।

दावा हुआ हजरत के सेती, ए करार बांध्या सरत एती।
नाम हजरत के सेहर कही, अग्यारे गिरह रस्सी पर दई।। २ ।।

रसूल साहब ने कहा कि मेरे हाथ से कयामत जाहिर हो। इस बात की चाहना से यह बात तय हुई कि कयामत होगी। लिखा है यहूदी की एक लड़की ने रसूल साहब के ऊपर जादू किया और बालों की रस्सी में ग्यारह गांठें लगा दीं।

Nijanand App

रस्सी रखी कूएं के माहें, ऊपर पत्थर दिया तांहें।
जबराईलें कही खबर, भेज्या अली कूएं गया उतर।।३।।

रस्सी को कुएं के अन्दर रखकर पत्थर से दबाकर बाहर आई। तब जबराईल फरिश्ता ने बताया कि हे रसूल! तेरे ऊपर यहूदी की लड़की ने जादू किया है। उन्होंने अली को भेजा जो कुएं में उतर गया।

अली रस्सी ल्याया ऊपर, गिरह अग्यारैं सदी हुई नजर।
अग्यारे आयत आई तत्पर, भेजी खुदा ने जबराईल खबर।।४।।

अली रस्सी लेकर ऊपर आया। अब रसूल साहब ने समझा कि कयामत ग्यारहवीं सदी में होगी। उसी समय खुदा ने जबराईल के द्वारा ग्यारह आयतें भेजीं।

इन पढ़ने रसूल खबर भई, हर आयत हर गिरह खुल गई।
उमर रजीअल्ला करी नकल, अजब आयत आई सकल।।५।।

इन आयतों को पढ़ने से ग्यारह गांठें खुल गईं। तब रसूल साहब को ग्यारहवीं सदी में कयामत होगी, इस बात की जानकारी मिली। उनके यार उमर ने इन आयतों को पढ़ा कि यह विचित्र आयतें आई हैं।

वास्ते रद करने को सेहर, खुली गांठें छूटे पैगंमर।
इनसे पनाह पकड़ी मैं, सो तिनकी फजर करी हैं जिने।।६।।

रसूल साहब का जादू टोना हटाने के वास्ते सभी गांठें खुल गईं और रसूल जादू से मुक्त हुए। अब श्री महामतिजी कहते हैं कि इस किस्से से मुझे पता लगा कि फजर ग्यारहवीं सदी के बाद होनी है।

नोट—परमधाम में श्री राजजी महाराज ने मोमिनों तथा श्री श्यामाजी महारानी के ऊपर फरामोशी का परदा (जादू) डाला। रस्सी में ग्यारह गांठें ग्यारहवीं सदी की पहचान कराने वाली हैं। ग्यारहवीं सदी के आखिर में स्वयं जब प्राणनाथजी जाहिर हुए, तो बेसुधी हटी और जागनी शुरू हुई।

फलक चीज केहेते हैं एक, हुआ चाहिए दोऊ देखो विवेक।
महंमद ले उठे उमत खास, सो तो पोहोंचे साहेब विलास।।७।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि कयामत के वक्त आसमान लाल रंग का होता है। विचार करके देखो। नौतनपुरी में श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी आए। चन्द्रमा जैसे उदय हुए। चन्द्रमा उदय होते समय जैसे रंग लाल होता है वैसे ही श्री देवचन्द्रजी का ज्ञान फैला। यह एक फलक (आसमान) है। फिर श्री पद्मावतीपुरी धाम में श्री प्राणनाथजी के मुखारबिन्द से कुलजम सरूप की वाणी का सूर्य उदय हुआ। सूर्य उदय होते समय रंग लाल होता है। इस तरह से कुलजम सरूप की वाणी को सुनने वालों के दिल खुशी से भरे लाल हैं। यह दूसरी फलक (आसमान) है। इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कुलजम सरूप की वाणी से मोमिनों को जगाकर अखण्ड घर परमधाम ले जाएंगे।

पीछे रह्या जो पत्थर घास, सो इन दुनियां की पैदास।।८।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि पीछे जो बच जाएंगे, वह पत्थर और घास (जीवसृष्टि) हैं। यह चौरासी लाख योनियों में जन्में मरेंगी।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४३३ ।।

Nijanand App